Updesh - Bhartiya Vidya Bhavan - I

Date	:	17th March 1975
Place	:	Mumbai
Type	:	Seminar & Meeting
Speech Language	:	Hindi

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 21
English	-
Marathi	-

II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	-

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

उन सब के बारे में मैंने काफ़ी विशद रूप से बताया है और जिस चैतन्य स्वरूप की बात हर एक धर्म में, हर समय की गयी है उससे भी आप में से काफ़ी लोग भली भाँति परिचित हैं। उस पर भी जब भी मैं कहती हूँ कि आप गृहस्थी में रहते हो और आप हठयोग की ओर न जायें, तो बहुत से लोग मुझ से नाराज़ हो जाते हैं। और जब मैं कहती हूँ कि इन संन्यासिओं के पीछे में अपने को बर्बाद मत करिये और इनको चाहिये की गृहस्थ लोग दूर ही रखें, तभी आप लोग सोचतें हैं कि माँ, सभी चीज़ को क्यों मना कर रहे हैं? ऐसे तो मैं सारे ही धर्मों को संपूर्ण तरह से आपको बताना चाहती हूँ। इतना ही नहीं, इतना ही नहीं जो कुछ भी इसमें आधा-अधूरा भाकित है उसको मैं पूर्ण करना चाहती हूँ। मैं किसी भी शास्त्र या धर्म के विरोध में हो ही नहीं सकती। लेकिन अशास्त्र के जरूर विरोध में हूँ और अधर्म के और जहाँ कोई चीज़ अधर्म होती है और अशास्त्र होती है, एक माँ के नाते मुझे आपसे साफ़ साफ़ कहना ही पड़ता है। बाद में आपको भी इसका अनुभव आ जायेगा, कि मैं जो कहती हूँ वो बिल्कुल सत्य है, प्रॅक्टिकल है। जब आप अपने हाथ से बहने वाले इन वाइब्रेशन्स को दूसरों पे आजमायेंगे, आप समझ लेंगे, कि मैं जो कहती हूँ बिल्कुल सच बात कहती हूँ और पूर्णतया आपके हित के लिये और आपके उत्थान के मार्ग से व्यवस्थित रूप से प्रकाशित होने के लिये कहती हूँ। यही एक बड़ी शोचनीय स्थिति है, कि मानव सत्य को लेने में बहुत टाइम लगाता है। अगर झूठ कोई फैलाये तो मनुष्य उसे बहुत जल्दी मान लेता है या कोई ऐसी चीज़ कि जिससे उसकी कमज़ोरियों को प्रबलता मिले या उसके अहंकार को पुष्टि मिले, तो मनुष्य उसको बहुत जल्दी आत्मसात कर लेता है।

पर आज मैं आपसे थोड़ा सा हठयोग के बारे में और सांख्य के बारे में कहूँगी। क्योंकि शंकराचार्य ने भी साफ़ कहा है कि 'न योगेन न सांख्येन'। योग और सांख्य से आपको आत्मसाक्षात्कार नहीं है। इसलिये, मैं ये बात कोई पहली मर्तबा नहीं कह रही हूँ। ऐसे अनेक मर्तबा लोगों ने कहा था और आप जितने भी धर्म पुरुषों की ओर देखे तो किसी ने भी संन्यास नहीं लिया था। सिवाय नाथ पंथियों के। और उनका भी बड़ा बिकट मार्ग था। आप जानते हैं कि जनक राजा थे। राजा जैसे रहते थे, लेकिन उनको लोक विदेही कहते हैं। इसलिये जानकी जी को वैदेही कहा जाता है। आप जानते हैं कि नानक भी विवाहित थे और कृष्ण ने भी विवाह किया था। राम ने भी विवाह किया था और आप ही जैसे एक संसार के प्रिय हुये लोग थे। किसी ने भी संन्यास आदि नहीं लिया। ना ही कहीं इन्होंने योग को मान्यता दी। सिर्फ पतंजलि ने योग पर विशेष रूप से ध्यान दिया। लेकिन पतंजलि को भी लोग पढ़ते नहीं हैं। ये तो फिफ्थ हैंड, सिक्स्थ हैंड इन्फर्मेशन जो आती है योग के बारे में, उसी को मान लेते हैं और उसी को विशेष समझ कर के और योग, जिसको की हठयोग कहते हैं वो करने लग जाते हैं। परिवार में जो सामान्य तरह के लोग रहते हैं, उनके लिये तो हठयोग अत्यंत हानिकारक होता है।

अब वो क्यों होता है? कैसे होता है? ये मैं आपको समझाती हूँ। आप लोग ओपन माइंडेड से बैठे। दिमाग खोल के बैठेंगे तो अभी मेरी बात समझ जायेंगे। मानव की जो शक्तियाँ हैं वो सीमित है। वो शरीर के अन्दर सीमित

की गयी है। जब तक उसे आत्मसाक्षात्कार नहीं होता है, जब तक उसका कनेक्शन उस सर्वव्यापी शक्ति से नहीं होता है, तब तक उसकी शक्ति जो है वो सीमित होती है। जैसे एक बॅटरी का सेल है। जब तक बॅटरी के सेल पे चीज़ चलती रहेगी, तब तक उसकी सीमित शक्ति रहेगी। पर अगर उसका कनेक्शन इलेक्ट्रिक बेल से लगा दिया जायेगा, तो शक्ति पूरी समय आती रहेगी। मैं इसलिये बिल्कुल मॉडर्न बातों में समझाती हूँ, कि हमारे रोजमर्रा के जीवन में हम इसे देख सकते हैं। जब आप हठयोग करते हैं तो उसमें ह और ठ दो नाड़ियों का वर्णन है। जिसे की सूर्य नाड़ी और चंद्र नाड़ी ऐसे कहते हैं। जिसे की हमारे यहाँ सिम्पथेटिक नर्वस सिस्टम कहते हैं। इन दो नाड़ियों को जब आप इस्तेमाल करने लगते हैं, जिसे इड़ा और पिंगला नाड़ी कहते हैं। इन दो नाड़ियों के उपयोग में हम हमारे पास जो सीमित है, बिल्कुल ही जो सीमित एनर्जी हैं, उसको इस्तेमाल करते हैं। जिस वक्त में हम ये कहते हैं कि हम शारीरिक व्यायाम आदि करते हैं तो वो समझ लेना चाहिये कि हम हठयोग तो कर ही नहीं रहे हैं। हम सिर्फ 'हा' योग कर रहे हैं। हठयोग का मतलब होता है कि उसकी जो छः चीज़ें हैं वो पूरी करनी पड़ती है। यम, नियम आदि आप जानते ही हैं वो। वो जब तक आप पूरे नहीं कर रहे हैं तब तक आप बिल्कुल पार्शल योग कर रहे हैं और वो भी आप सिर्फ आपका 'हा' नाड़ी माने सूर्य नाड़ी का काम कर रहे है। सूर्य नाड़ी से आपका शरीर बढ़ सकता है और आपकी मेंटल कपॅसिटी शायद बढ़ जाये।

लेकिन हम लोग कम से कम तीन चीज़ हैं ही। एक तो हम मेंटल है, इमोशनल है और फिजिकल है। तो अगर हमने इन दो चीज़ों पर, विशेषत: शरीर पर, पूरी अपनी अगर सीमित शक्ति को खींच लिया, तो जो हमारी इमोशनल नाड़ी है, जिसको चंद्र नाड़ी कहते हैं, वो पूरी तरह से शुष्क हो जाती है। उसका सारा ड्रेन होते रहता है। वहाँ से सारा खींचते जाता है और वो आता है हमारे शरीर पर। और जब वो हम अपने शरीर को बढ़ाने के लिये उसका उपयोग करते हैं, तो जो हमारा इमोशनल बीईंग है वो बिल्कुल ही शुष्क हो जाता है। इसलिये आपने देखा होगा कि अधिकतर जो योगी लोग होते हैं एकदम बिल्कुल निष्ठुर स्वभाव के होते हैं। उनमें हृदय होता ही नहीं मानो और इस कदर क्रोधी और इतने इगोइस्टिकल होते है कि उनके जीवन को अगर आप समझ के पढ़े तो कभी कभी लगे कि ये तो एक तरह के इगोइस्टिकल मॉन्स्टर। जैसे आप विश्वामित्र को पढ़े। क्या उस हरिश्चंद्र बिचारे के जान को लग गये। खुद तो संन्यासी थे। उसके भी जान को लग गये। वो अच्छा घर गृहस्थी में, अपने बीबी-बच्चों के साथ, बहुत धर्म से राज्य करता था। उस के जान का लग गये। उसके प्राण ले लिये और उसकी हालत खराब कर दी। आपने दुर्वासा को सुना है। उनका नाम सबेरे लीजियेगा तो आपको तीन दिन तक खाने को नहीं मिलेगा। तीसरे जमदग्नि साहब थे। उनके क्या कहने! याने यहाँ तक है कि पराशर मुनि के लिये कहा जाता है, कि उन्होंने बहुत ही एक गंदी बात अपने लाइफ में कर दी थी, सत्यवती के साथ। जिन्होंने की अपने हृदय को पूरी तरह से इम्प्टी तो कर दिया था, लेकिन अपनी काम वासनाओं पर वो कुछ भी नहीं अधिकार रख पाये। एक क्षण में उनकी सभी तपस्या वगैरे भंग हो गयी और आज ऐसे अनेक हैं आप जानते हैं। अपने यहाँ ऐसे अनेक ऋषि-मुनि हो गये। परशुराम जो थे, जिन्होंने गुस्से में आ कर सारा समुद्र पी लिया था। किसी न किसी को भस्म कर दिया था। किसी न किसी को खत्म कर दिया था।

आज तक आपने ये किसी से ये नहीं सुना होगा कि इनमें से किसी ने भी किसी का उद्धार किया होगा या कल्याण किया होगा। माने अपने अन्दर जो सीमित शक्तियाँ हैं, उस सीमित शक्ति में से अगर आप सिर्फ एक नाड़ी

पर उस सारी शक्ति को अगर खींच ले, अपने फिजिकल बीईंग को अगर बढ़ाये या अपने मेंटल बीईंग को बढ़ाये, तो आपका जो इमोशनल बीईंग है वो बिल्कुल साफ़ कर जायेगा और ऐसा आदमी जो है वो किसी भी हद तक पहुँच जाये उसका कुछ आप नहीं कह सकते हैं। क्योंकि उसका इगो बलवत्तर हो जायेगा। हठयोग को छोडिये। कराटे कर के एक जापनिज लोगों का एक इसी तरह का प्रकार है, जिससे वो कहते हैं कि हम अपना डिफेन्स कर लेते हैं। हम अपने प्रोटेक्शन के लिये चीज़ सीख लेते हैं। और अगर हम किसी पर एक जगह प्रहार करे तो एकदम हम उसे खत्म कर सकते हैं। कहते तो हैं, हम डिफेन्स के लिये कर रहे हैं। लेकिन उससे इतने इगोइस्टिक हो जाते हैं, इतने क्रूर हो जाते हैं, कि उसका उपयोग बहुत बार वो लोगों को मारने के लिये करते हैं और आप जानते हैं कि जापनिज लोगों में, कुछ कुछ लोगों में बहुत ज्यादा क्रूरता इस कराटे के कारण आ गयी। आपका जो इमोशनल बीईंग है, आपका जो मन का स्थान है, आपकी जो लेफ्ट में जो नाड़ी है, वो सारी ड्रेन आऊट हो जाती है और जितने भी हठयोगी होंगे, उनकी मृत्यु कैन्सर से तो नहीं होगी। शरीर तो उनका बड़ा तेजस्वी दिखायी देगा। क्योंकि वो सूर्य नाड़ी पर चल रहे हैं। उनकी शकल बहुत अच्छी दिखायी देगी। औरते जो हैं वो भी आप देखियेगा, वो बड़ी कॉन्शस होगी अपनी बॉडी की और फिगर की, और ऐसी औरतें जिस घर में होगी वहाँ पर पति का जीना मुश्किल हो जायेगा। बच्चों का जीना मुश्किल हो जायेगा। सब की जान खा लेंगे। उनकी परफेक्शन करने में, पति कहेगा कि, 'भगवान बचाये रखें। ये कहाँ से संन्यासिनी मेरे घर में आ गयी! मेरी तो इस औरत ने जान ले ली।' यहाँ ये क्यों रखा? वहाँ वो क्यों रखा? हर तरह से वो पति को खाती रहेगी। उस खाने में वो ये सोचेगी कि, वो बड़ा धार्मिक कार्य कर रही है। उसको कभी ये नहीं लगेगा कि ये सब करने से 'मैं सब को दु:ख पहुँचा रही हूँ। मेरे बच्चों के लिये मैं जान ले रही हूँ। उनको भी मैं परेशान कर रही हूँ।

ऐसे ही बहुत से आदमी परिवार में होते हैं, कि वो हनुमान जी की तो वो पूजा करते हैं, लेकिन स्वयं हनुमान जी के नाना हो गये। घर में अगर मजाल नहीं कि कोई यहाँ से यहाँ पानी रख दे। वो चिल्लाना शुरू कर देंगे। हमारे खानदान में भी ऐसे सत्पुरुष थे। हैं, अभी भी जीवित हैं। उन्होंने सब के छक्के पंजे घर में छुड़ा दिये थे। लेकिन मैंने ही उनके मूढ़पनता उतारा और बाकि तो सब लोग उनसे थर्राते रहते थे। इस कदर वो शुष्क, इस कदर वो दूसरों के विचारों से, दु:खों से और दूसरों की तकलीफ़ों से अनभिज्ञ। इस कदर वो क्लोज्ड, इनसेन्सिटिव जिसको कहते हैं, संवेदनशीलता बिल्कुल उनमें नहीं रहती। और कम्पॅशन और लव की तो बात ही मत करिये। वो तो वो समझ ही नहीं सकते। अधिकतर लोग जो योग करते हैं, औरतें, चाहे आदमी, उनकी कभी भी घर में पटती नहीं। अगर दोनों करें तो भगवान ही बचाये रखें। उस घर का ही सत्यानाश हो जायेगा। लेकिन एक भी करें तो भी काफ़ी है। बीबी साहिबा जो है वो सिनेमा ॲक्ट्रेस होने के ख्वाब देखती है और आदमी अपने को सँडो बना के फिरता है। हम लोगों को क्या सँडो बना के क्या करने का है? हम को क्या कुस्तियाँ लड़ने की है? आपको इतनी योगविद्या कर के करने का क्या? अरे भाई, साधारण तरह से रहने के लिये जो बॅलन्स लाइफ़ चाहिये वैसे रहिये। हाँ, ठीक है, आपने थोड़ा बहुत एक्सरसाइज़ कर लिया, ये ठीक बात है। लेकिन इतनी ज्यादा अतिशयता एक चीज़ को बढ़ाने के लिये करने की क्या जरूरत है, कि दूसरा आपका जो हृदय चक्र जो है वो मायनस हो जायेगा। उनका अगर मायनस हो जाये तो ऐसे आदमी को आप अगर दूर से देख लें, तो आप दूसरी तरफ़ से चक्कर खाते हैं।

एक दिन मैं लखनऊ में थीं। वो जो हमारे महाशय जी, हमारे घर में बहुत ज्यादा रौब झाड़ते थे। उनकी आदत

थी कि सबेरे वो एक तरफ़ से घूमने जाते थे। तो एक दिन मैंने देखा, कि मैं भी उस तरफ़ से घूमने जाती थी, तो कुछ लोग बेतहाशा भाग के निकले। मेरी कुछ समझ में नहीं आया, कि मुझे देख कर भाग रहे हैं कि उनको देख कर। क्या हो गया है? उसके बाद में सब लोग मुझे मिलने आये। वो कहने लगे, 'भाभी जी माफ़ करना, हम बदतमीज ऐसे भागे लेकिन इस खुँखार जानवर को ले कर आप कहाँ निकलीं? इस शेर बब्बर को ले के आप कहाँ निकली थी। वो तो उल्टे पैर ही दौड़ने लग गये। भगवान बचाये हमें, ये तो अभी डंडा ले के हमको मारेंगे।' उनसे बात करने जाईये, वो आपको खाने को दौड़ेंगे। कभी हँसना तो वो जानते ही नहीं हैं। उनको मालूम ही नहीं कि दुनिया में हँसना या स्मित या कोई ऐसी चीज़ है। बड़े सिरिअस होते हैं। और किसी का दु:ख, किसी की तकलीफ़ समझते ही नहीं। अगर आप उनसे कहे कि, 'इस आदमी को बहुत दर्द है। इतना दर्द में पड़ा हुआ है।' कहने लगेंगे कि, 'देखो मैंने कैसे अपने दर्द को कंट्रोल किया। तुम भी करो।' अरे, भाई वो कोई योगी नहीं है। तुमने अपने दर्द को कर लिया। लेकिन वो जानते नहीं, कि उनकी मृत्यु जो होगी वो हार्ट अॅटॅक से, हमेशा। जो सहजयोगी होता है उसका दोनों बॅलन्स होता है। उसकी वजह मैं बाद में बताऊंगी। लेकिन जितने भी योगी लोग होंगे, वो खट् से यूँ खत्म हो जायेंगे और पता नहीं चलेगा। उसके बाद जब वो मरेंगे तो चार आदमी मिलना भी मुश्किल हो जायेगा। मैं आपसे बताती हूँ। ये जो योगी लोग मरते हैं तो मुश्किल से चार आदमी मिलते है। पाँचवा आदमी जो हंडी उठाये, वो नहीं मिलने वाला। क्योंकि बाल-बच्चे तो पहले ही भागे रहते हैं और सारे दुनिया के लोग ऐसे लोगों से भागे रहते हैं।

अब योग से लोग कहते हैं कि हम आपका रोग निवारण करें। भगवान बचाये रखें। इनसे आप रोग निवारण करने की जगह आपको ऐसे रोग लग जायेंगे कि आपकी बीबी कहेगी कि, 'मुझे तलाक दीजिये। भगवान बचाये रखें। आप की तो मैं बाधा ही नहीं रख सकती। आप के साथ मेरा निर्वाह नहीं हो सकता। आपने जो ये योग विद्या शुरू कर दी इससे भगवान बचाये रखें।' इसलिये हजार बार ये सोच लेना चाहिये, कि योग परिवार में रहने वाले लोगों के लिये बड़ा ही खतरनाक है। लेकिन योग क्यों बनाये? किस व्यवस्था में बनाया गया? पतंजलि को, कितने हजारों वर्ष पहले की बात है जब पतंजलि ने पातंजल योग निकाला। उस वक्त का योग है। वो सोसाइटी आज नहीं है।

पहले तो बात ये थी, कि उन दिनों में हमारे यहाँ चार वर्णों की संस्था थी। आप तो जानते ही हैं, पहले छोटे बच्चे पाँच साल के बाद में जंगलों में जा कर एक रियलाइज्ड सोल गुरु के पास पढ़ते थे। रियलाइज्ड सोल। ये ऐरे-गैरे, नत्थू खैरे नहीं। रियलाइज्ड सोल, उसी की व्याख्या गुरु होती है। इतना ही नहीं कि वो रियलाइज्ड सोल था। उसको सारा उसका शास्त्र मालूम था, रियलाइजेशन का। इसलिये वो जंगल में रहते थे, और उन्ही के नाम से युनिवर्सिटी चलती थी। जिसको हम गोत्र कहते हैं, ये वही युनिवर्सिटीज है। और सगोत्र विवाह इसलिये मना था, कि एक युनिवर्सिटी में रहने वाले बच्चे आपस में सब भाई-बहन के जैसे रहते थे। अच्छा, उस उमर में आपकी हेल्थ बढ़ती है। आपकी ग्रोथ बढ़ती है। इसलिये आपको जरूरी है कि उस वक्त आपके शरीर को पोषक जितनी भी एनर्जी लगे मॅक्सिमम दी जाये। दूसरी बात, जो आपकी हृदय की बात है, जो प्रेम की बात है, एक तो गुरु उसको सम्भालता था। गुरु अपने प्रेम से उसको भरा रखता था। दूसरे जो वानप्रस्थाश्रम में ग्रँड पॅरेंट्स, उनके जो दादा-दादी, नाना-नानी वो भी जंगल में बैठे रहते थे। तो वो लोग अपने बाल-बच्चों को प्यार करते थे और गृहस्थी में कोई भी योग नहीं था। वो अपने बच्चों को जो प्यार देते थे, उससे उनकी दूसरी शक्ति जो थी, वो प्लावित होती थी।

विवाह के बाद में आप ही सोचिये कि कितना ड्रेन आपका पहले ही हो रहा है। मतलब ये कि आज कल की सोसाइटी में ऐसे ही आदमी किस कदर परेशान है। उसके पास टाइम ही नहीं की कुछ प्यार करें या किसी से दो मिनिट प्यार से बात करें। और उस पर योगी अगर कोई हो गया, तो आप ही सोचिये, ऐसे ही मियाँ-बीबी के हजार झगड़े रहते हैं, तब तो आपने सत्यानाश ही कर दिया पारिवारिक जीवन का। पारिवारिक जीवन के सिवाय सहजयोग नहीं बनता। ये भी एक बात विशेष है। साधारण तरह से जो पारिवारिक लोग हैं उन्हीं से ही सहजयोग होता है। इसलिये जो लोग संन्यास लेते हैं उनसे कहना ठीक है आप संन्यास लो और जंगलों में बैठो। जंगल में ही रहो। दो दिन बात वहाँ से भाग के आयेंगे, भेष बदल के। कल ही मुझे एक साहब मिले थे। वो मुझे कहने लगे कि, मैंने स्टॅटिस्टिक इकठ्ठे कर लिये हैं। मैं वहाँ गया था हरिद्वार। वहाँ मैंने बहुत सारे सन्यांसियों से भेंट की। तो मुझे आश्चर्य लगा कि, ९९.९% और १% मैं इसलिये कहता हूँ कि मुझे ऐसा आदमी मिला नहीं। पर मैं कहता हूँ कि ....होगा कुछ। वहाँ पर जितने भी लोग आये हुये थे, वो लोग बता रहे थे कि साहब मेरी बीबी मर गयी तो मैं आ गया। मेरा बाप मर गया तो मैं आ गया। फलाना हो गया तो तो मैं आ गया। इन्कमटॅक्सवाले मेरे पीछे पड़ गये तो मैं आ गया। स्मगलिंग में पकड़ा जाता था तो मैं आ गया। मतलब जेल से बचने के लिये बहुत से लोग आ गये। और अपने पारिवारिक जीवन से बचने के लिये भी वहाँ आये हैं। दुसरे स्टाइल के लोग ये थे कि साहब मैं यहाँ पहुँचा। मैंने सोचा कि यहाँ कुछ खाने-पीने की व्यवस्था हो जायेगी। तो यहाँ देखता हूँ कि गेरुआ वस्त्र के लिये गेरुआ रंग भी नहीं मिलता है। बड़ा मुश्किल काम है। यहाँ बड़ा बुरा हाल है। आज कल तो दुनिया में ऐसी खराबी हो गयी है कि संन्यासिओं को कोई भीख ही नहीं देता।'

तो जितने भिखारी दुनिया भर के थे, उन्होंने सोचा कि ये आसान है। थोड़ी सी भीख माँग कर के गेरुआ वस्त्र लगा लो। और जा के सभी हिमालय में रहे। मैं अभी दिल्ली में थी तो कम से कम पाँच-छ: आश्रम से चिठ्ठी आयी कि 'माताजी, आप तो सारे संसार की पालन करने वाली हैं। आप साक्षात् शक्ति हैं। आप हम भिखारिओं के लिये,' ये नहीं लिखा था, पर मैं कहती हूँ बीच में, कि 'हम साधुओं के लिये आप वहाँ से ब्लँकेट्स और धोतियाँ, और ये, और वो भेज दीजिये।' मतलब भिखारी नहीं लिखा था, उन्होंने अपने को साधु लिखा था। साधु माने जो साध लेते हैं। समझे न आप? जो साध ले वो साधु। तो इस तरह से उनकी चिठ्ठियाँ मेरे पास हैं। आप बताईये, कि आपके समाज के उपर में पॅरासाइट्स जैसे ये लोग लगे हैं। ये आपके दौलत के उपर में, माने कमाई आप करते हैं, मेहनत आप करते हैं, सब कुछ आप करते हैं और खायेगा कौन? तो ये साधु बाबा! बताईये, ये तो कुछ मेहनत नहीं करता। ये तो कुछ नहीं करता। ये तो मोटा होते जा रहा है। और आप दुबले होते जा रहे हैं। इस तरह के साधु बाबा गाँव-गाँव, गली-गली घूमते हैं। और अपने शहर में भी काफ़ी ऐसे लोग बैठे हुये हैं, जो अपने को संन्यासी कहते हैं।

मैंने एक छोटी सी, कहना चाहिये कि एक सहज कविता मेरे मुँह से निकली थी कि, 'तू ले संन्यास, पैसा मेरे पास।' इस तरह के यहाँ पर आपको ऐसे लोग साधु मिलेंगे, कि आप उनको नमस्कार कर के, जा के अंत में संन्यास ही लीजियेगा। क्योंकि वो आप का लोगों से पीछा छुडाओ या छुट्टी कराओ। इन लोगों में इतनी सीरिअस, ये जो दिखाते हैं, ये जो इतना अपने पाखण्ड लाते हैं, इसको समझ लेना चाहिये। अब बहुत से यहाँ पर लेड़िज लोग, अपने यहाँ खास कर के, इस बात को समझ लें। क्योंकि लेड़िज लोगों को खास कर, सीताजी ने भी एक बार बड़ी भारी गलती कर ली। ऐसी गलती आप लोग रोज कर रहे हैं, कि कोई भी साधु बाबा आया तो चले उसके चरण में।

फिर वो अभी जेल से छूट के, कपड़ा बदल के आया हो। चाहे वो अभी किसी को मार के अपने घर में छुपने को आया हो। चाहे वो कुछ भी धंधा कर के आयेगा। औरतों को तो 'अहाहा...! बाबाजी आये थे।' 'कौन बाबाजी?' 'वो नहीं मालूम।' 'भारी भारी थे। बड़े तेजस्वी थे। मैंने तो उनको शरणागति दे दी।' अरे पागल, वो कौन था? 'वो तो पड़ौसी के यहाँ नौकर था। वहाँ से भागा है चोरी कर के। तुम को बुद्धू बना रहा है। दाढ़ी वाढ़ी बना के आ गया। तुम उनके पैर छूऐ।' 'नहीं, नहीं। हम को बड़ा आनन्द आया!' 'क्या आनन्द आया?' बाद में कहा, अहाहा...! क्या आनन्द आया। साधु बाबा घर में आईये। साधु बाबा घर में आराम से रह रहे हैं। देवीजी, माताजी और पिताजी उनके चरण रोज धो कर के पीते थे। करते करते देखा कि घर की लक्ष्मी गायब हो रही है। कहने लगे कि 'भाई, कहीं से कर्जा लो। उनका कुछ करने का है।' उसके बाद साधु बाबा ने कहा कि, 'अब हमारा स्थान,' वो स्थान नहीं कह पाये। संस्कृत तो जानते नहीं ज्यादा तर। 'अ-स्थान, हमारा अस्थान यहाँ से हिलेगा।' उनका अ-स्थान हिला, उसके साथ आपकी तिजोरी भी हिल जायेगी। ये नहीं हुआ, तो उन्होंने कुछ काम ही नहीं किया ऊपर में। अगर असली नहीं होगा तो ऐसे ही धंधे करेगा। वहाँ अपने नसीब के मारे हजारों लोग लंदन में आते हैं। दिल्ली में आये, 'माताजी, इनसे पिंड छूड़ाओ। वो हमारे पीछे में लग गया। वो हमारे पीछे में लग गया। इन से कैसे क्या करें?' लेकिन अभी भी जो लोग इस चक्कर में हैं। उनसे अगर कहो कि, 'ये साधू बाबा के पीछे तुम क्यों मरते हो?' तो उनको बड़ा बुरा लगता है। लेकिन जब उनका पूरा चटमुंडन हो जाता है, तब वो मेरे पास आ के कहते हैं कि, 'माताजी, वो तो हम को मुड़ा के चला गया।' इतनी सिरिअस ये बात है और हँसी भी आती है, मनुष्य की महामूर्खता पे।

अब मैंने आप से बताया है कि चंद्र नाड़ी और सूर्य नाड़ी, अपना बैलन्स नेचर ने खुद ही ड़ाल दिया है। आपको करने की जरूरत नहीं है। आप काहे को अपने पीछे लगे हुये हैं। आप बैलन्स लाइफ़ नीट करें। नॉर्मल लाइफ़ नीट करें और साधारण तरह से रहें। कोई जरूरत आपको नहीं है कि आप कोई द्राविडी प्राणायाम करें। मैं देखती हूँ कि कुछ लोगों को सबेरे उठ के सर के बल खड़े होते हैं। हमारे सामने एक साहब रहते थे, वो चार बजे उठ कर के जो लटक जाते थे। तो वो करीबन छः बजे उस लटकन से उतरते थे। और उनके घर में उनका बहु से झगड़ा, लड़के से झगड़ा। सारा घर परेशान कि बुड्ढा मरे तो आफ़त छूटी। जब वो बुढ्ढा मरे भी तो उन्होंने अपने बच्चों के लिये कुछ नहीं छोड़ा। सारा दान कर गये दूसरे योगाश्रम को। वहाँ भी जितने बुड्ढे मरेंगे वो भी इस तरह से हो जायेंगे। और ये भी हार्ट ही के पेशंट थे। लेकिन वो हमेशा सर के बल, शीर्षासन में लटके रहते थे। अब ये पागलपन देखिये कि, मैं योग के विरोध में कह रही हूँ तो लोग कहेंगे कि, 'माताजी, ऐसा क्यों कहती हैं?' पर भाई, तुम ही सोचो, कि क्या जरूरत है इतना द्राविडी प्राणायम करने की? ठीक है, अपना शरीर ठीक से चलना चाहिये इसलिये थोड़ा बहुत एक्सरसाइज कर लिया हो गया। लेकिन चौबिसों घंटे, हर समय वही सर के बल खड़े रहने की क्या जरूरत थी आपको?

सब से पहली चीज़ है प्रेम करना सीखो। परिवार, संसार, या संसार का जो सारा परिवार है, या उससे भी बढ़ के मैं कहूँ, सारी ही सृष्टि, सारा ही विश्व, सारा ही प्रेम की धूनी पर चल रहा है। प्रेम को छोड़ कर के ये किसने कहा है आपको तमाशा करने के लिये। इस तरह की चीज़ें करने की आपको कोई जरूरत नहीं। अब एक दूसरे और निकले हैं आजकल वो जो बजा बजा कर के लंदन में घूम रहे हैं। उन्होंने अपने भारतीय संस्कृति को और चार चाँद

लगा दिये हैं। उनका अगर मैं आपको किस्सा सुनाऊँ तो आप कहियेगा कि, 'इनको माताजी, आप थप्पड़ मार के क्यों नहीं चली गयी?' वहाँ पे .....स्ट्रीट पर कॅबेरे डान्स उनका चलते रहता है। सर में वो बाल चटमुंडन करते हैं। और वो होती हैं न चोटी, जिसको गोटी बोलते हैं और मराठी में जिसको 'शेंडी' कहते हैं। वो अपने यहाँ चिपका के वहाँ ड्रेसिंग होता है। वो ड्रेसिंग बिकता है। एक एक के दाम पाँच पाँच सौ रुपया। उसको यहाँ चिपका चिपका कर के और वहाँ नाचते हैं। और नाचते वक्त में धोती तो उनको कभी पहनना आता ही नहीं बेचारों को। तो भी धोती पहनते हैं, औरतें साड़ियाँ पहनी रहती हैं। उनको साड़ी भी पहनना नहीं होता और धोती भी नहीं पहनना आता। अरे भाई, हमारा ड्रेस है, हमें दे दो। तुम को पहनना भी है तो कायदे से पहनो और हमारे ढंग से चलो। एक तो वहाँ की औरतें साड़ियाँ पहन भी नहीं सकती। उनकी चाल ही घोड़े जैसी है। ऐसे ऐसे चलती है। हम लोग तो ऐसी ऐसी चलती हैं न! वो लोग ऐसी ऐसी चलती हैं।

हम अभी वहाँ गये थे लखनौ में। वहाँ किसी की शादी हो रही थी। तो वहाँ देखा तो सब लोग ऐसे ऐसे चल रहे थे। कोई घोड़े जैसा कूद रहा था। साड़ी सब पहनी थीं। मैंने कहा, ये कौन भाई, घोड़े जैसा कूद रहा है? तो सामने जा के सुना कि एक बहू अमेरिका से आयी हुई हैं। मैं सब समझ गयी। और उसके चलते समय चप्पल का बंद नहीं लगा। खसकते खसकते घोड़े जैसी ऐसी चल रही थी। और उनके बाल भी घोड़े के आयाल जैसे थे। उन लोगों को इसकी आदत नहीं। घोड़े जैसे वो लोग चलते हैं। घोड़े जैसे वो लोग रहते हैं। उनका तरीका ही घोड़े जैसा उनको क्या कहना? वो साड़ी पहनने से पहले उनको चलने को आना चाहिये। लेकिन वहाँ बॉल स्ट्रीट पर जो औरतें, आप सोचिये, जिन्होंने कभी साड़ी बाँधी नहीं। वो साड़ी बाँध के और ये लोग धोती बाँध के कॅबेरे डान्स करते हैं। मारे लज्जा के आपको लगता हैं कि प्रभु, ये क्या? और वहाँ लोग मज़ाक में पार्टीज में करते हैं, कि 'माताजी, आप ये साड़ी पहने हैं। माताजी, आप ये चीज़ पहने हैं। आपको कोई प्रॉब्लेम नहीं होता?' मैंने कहा, 'किस का?' कहने लगे, 'हमने बॉल स्ट्रीट पर देखा कि सब धोतियाँ और साड़ियाँ खुल जाती हैं।' हमने कहा, 'भाई, ये तो जन्मजन्मांतर का हमारा पेहनावा है। और यही हमारी लज्जा भी।' और इसको आप कहिये कि ये भारतीय संस्कृती को बढ़ा रहे हैं। भगवान बचाये रखें। ऐसे लोगों से कहना कि, 'हम ही को बढ़ाने दीजिये हमारी संस्कृति, जो हमारे रग रग में है। आप मेहेरबानी से हमारी संस्कृति को मत बढ़ायें।' ये बात रही आपके हठयोग की जिसको की आप हठ... कहते हैं। हालांकि हठ है तो चलते ही नहीं। 'ह' पे ही चलते है। और ह ठ में से जब 'ठ' पे आते हैं तो भगवान ही बचाये। ह का मतलब होता है कम्प्लीट ॲक्सीनन्स। ये नहीं खाओ, वो नहीं खाओ। मेरे पच्चीस सोमवार करने है। मुझे इतने लक्ष जो है, वो शिवजी को चढ़ाना है।

अब एक देवीजी आयी थीं अलाहाबाद से। माँ ब्राह्मण घर से है। वो एक यहाँ महाराष्ट्रीयन ब्राह्मण हैं उनके घर में ठहरे। अब वो बड़ी आदमी की रिश्तेदारिण थी, तो भाई ठीक है, उन्होंने अपने घर पे ठहरा दिया। जब वो चली गयीं। उसके बाद में उनके घर के लोग ठीकठाक हुये। उसके बाद में उन्होंने आ के कहा कि मेरी खापर पणजी भी ऐसी नहीं थी, जैसे ये औरत थी। मैंने कहा, 'क्या हुआ?' कहने लगी कि, 'आते ही साथ उन्होंने अपने पती को डाँटना शुरू कर दिया।' 'तुमको मालूम है मैं नल का पानी नहीं पीती हूँ। मेरे लिये कुँअे का पानी क्यों नहीं भरवा के रखा?' पती बेचारा रात में कावड़ ले के कुँअे पे गया। वहाँ से जा कर के पानी लाया। सबेरे उठ के उसने चिल्लाना शुरू किया कि 'मुझे तो कितने लक्ष जो है शिवजी पर चढ़ाने के है, बेल के पत्र और वो लाना पड़ेगा।' तो वो गीले

बदन जा के लाये। अब वो गीले बदन मलबार हिल पे गया तो उसने उसको पकड़ के मारा। वो जो वहाँ के आदमी थे। उन्होंने कहा कि तुमको किसने कहा कि इतने बेल के पत्र तोड़ने के लिये? उसी गीले बदन में वो ढूँढते, ढूँढते। कहाँ से वो नौकर गया और उस ने ला के उसको दिया। उस पर पर चार बार तुमने पत्ते ठीक से नहीं देखे। एक तो वो चार बजे जा के तोड़ने का। उसको क्या दिखायी देगा? उसको इतना डाँटा, इतना डाँटा। लेकिन शाम को १०१ बुखार आया। वो बेचारा कहने लगा मैं बीमार हो गया। मुझे अस्पताल भेज दीजिये। उसके बाद दुसरा नौकर आया। उसको जब पता चला, कि इनका काम करने का है, तो उसको तो वैसे ही हुड़हुड़ी भर के आयी। उसने कहा, मुझे मलेरिया का अ‍ॅटॅक आया। वो भी चला गया। फिर ये बिचारे उनके पतिदेव थे, उनको भी पेड़ पे चढ़वाया। उनसे भी सारा काम करवाया। अंत में वो भी हार गये। पाँच दिन तक। उन लोगों ने फिर मुझे फोन किया कि, 'माताजी अपने प्रभाव से इनका स्थान बदलवाईये।' तो फिर वो पूना गयीं। वो जहाँ जहाँ गयीं उनके उपद्रव मशहूर है। उसके बारे में बड़ी जाहिरात हुई। और जिन साहब से रिश्तेदारी थी, उन्होंने कहा कि, 'साहब, मैंने तो खुद बचाने के लिये उनको भेजा।' मैंने कहा कि, 'हम लोग आपको आ के डंडा मारेंगे। आप मेहेरबानी कर के ऐसे दिव्य लोगों से कहिये कि, वहीं त्रिवेणी में बैठ कर के, वहीं जप करें और मौन में रहें। दूसरों को इस झंझट में ना डाले।' (मराठी) - कळलं का बायकांना काही? कळतंय की नाही?

अच्छा, अब ये हुआ व्यय फालतू का, जो हठयोग में भी लोग करते हैं। और इस तरह की पूजा में। आप पूजा में करें। ये दूसरा प्रकार है पूजा में जाने का, मंदिरों में जाने का। मैं मंदिर के विरोध में कभी भी नहीं हूँ, ना तो मैं किसी धर्म के विरोध में। मैं धर्म में ही हूँ। लेकिन मंदिर में जो गणेश जी बैठे हुये हैं, वहाँ नहीं आप जा सकते। गणेश जी के पास जो भूतनाथ बैठे हुये हैं, वो आपके आज्ञा चक्र पे, चट से लगा दिया और आप पे चढ़ गया भूत। मैं तो सिर्फ मंदिर गयी थीं। एक लड़का अभी दिल्ली में हमारे पास क्यूअर के लिये लाये। उसको हमने वाइब्रेशन्स दिये। वो ठीक हो गया। उसके बाद उनसे कहा कि, 'देखो, भाई, ये गंदा दोरा उतारो।' तब ठीक हो गया वो। उसके बाद दूसरे दिन वो आये। फिर वही। मैंने कहा, 'इतनी मेहनत करी एक घंटा, दो घंटा और फिर वैसे के वैसे कैसे हो गये। आज्ञा चक्र कैसे पकड़ा?' 'हम तो कहीं भी नहीं गये माताजी।' तो मैंने कहा, 'टीका कहाँ का है?' कहने लगे, 'भैरव के मंदिर में गये। भैरवनाथ का लगाया।' मैंने कहा, 'भैरवनाथ को और कोई धंधा नहीं। वो कहाँ से लगाने गये। ये कहाँ से लगा के आये तुम?' मैंने फिर उसको बिठाया। सब कुछ किया। फिर वो मंदिर का नाम पूछा। फिर वो पुजारी का नाम पूछा। फिर उसको चप्पल मारें। तब कहीं जा कर उसका छूटा।

सारे दुनिया भर के जितने राक्षस हैं, उन्होंने सब मंदिरों का ठेका ले लिया। विवाह वो करेंगे नहीं। क्यों करेंगे? वो तो ब्रह्मचारी हैं, पर्मनंट ब्रह्मचारी हैं। हमारे यहाँ ऐसे ऑर्गनाइझेशन भी हैं। जो कहने लगे कि, 'साहब, हम ब्रह्मा हैं।' 'ब्रह्मा माने क्या?' 'हम विवाह नहीं करते।' 'ठीक है, विवाह नहीं करते।' पुरुष भी विवाह नहीं करते, औरतें भी विवाह नहीं करती। लेकिन सब होता है, बाकी सब। विवाह नहीं करते। बड़ी अच्छी जगह है। चलो भाई, सामूहिक सारा मामला बना हुआ है। बड़े आनन्द से रह रहे हैं। और खास कर के योग में जो लोग होते हैं। उनको क्या हो जाता है, कि वो इतने ठूठ जैसे हो जाते हैं, इतने ठूठ जैसे हो जाते हैं, कि कोई उनके साथ बैठ नहीं सकता। खास कर सावित्री का मंत्र कहने वाले लोग। सावित्री का मंत्र जो है वो आपको ठूठ जैसे बनायेगा। क्योंकि उसमें, उसका निचोड़ कर के जो मिट्टी बच जाती हैं न वो होती है। सावित्री का मंत्र ही वो चीज़ है। जिसमें की आपको

कहा जाता है, जैसे ये है, कि ये दीप है। दीप के अन्दर में ज्योत है। वो सिर्फ दीप ही की बातें हैं, अलग जगह की भू: है, भुव: है, ये सब चीज़ें हैं। लेकिन वो दीप के अन्दर की चीज़, जलने वाली जो चैतन्य शक्ति है, उसकी उसमें बात है। सिर्फ दीप के ही डिफरन्ट डिफरन्ट फॉर्म बतायें हैं। अब आपने वो रखना शुरू कर दिया। अब जो लोग ऐसा करते हैं, उन लोगों को बड़ा प्रॉब्लेम हो जाता है कि किसी समाज के वो फिट ही नहीं होते। क्योंकि जहाँ भी वो जायेंगे, वहाँ लोग अगर जिस कुर्सी पर वो बैठेंगे वहाँ उनका बंठा ढार। उसके घर में दर्शन दिये वहाँ गड़बड़। करते करते उनको ये लगता है कि चलो, किसी आश्रम में बैठें। चलो, पाँडेचरी जायें। चलो, वहाँ जायें। अब वहाँ सब ऐसे फूट मियाँ बैठे हुये हैं। इन लोगों का आपस में पटता है। क्योंकि सभी ठूठ हैं। तो इस तरह से ऑर्गनायझेशन्स बन जाते हैं। इसमें सब ठूठ लोग बैठ कर के ये प्लॅनिंग करते हैं कि औरों को कैसे ठूठ बनाया जायें। औरों का कैसे बंठा ढार करें। ये सारी व्यवस्था होती रहती है। और क्रोध, इतना इन लोगों में क्रोध होता है, कि आप उनसे एक मिनिट बात नहीं कर सकते। आपने बात की तो उन्होंने तडाक् से आपके ऊपर एक मारा हाथ। तो आपने सोचा, कि अरेरेरे...! ये लोग कभी किसी का कल्याण नहीं कर सकते। क्योंकि जिस के हृदय में प्रेम ही न हो, जिसके अन्दर करुणा जिसे कहते हैं, वही न बह रही हो, जिसके अन्दर किसी भी प्रकार का माधुर्य ही न हो, वो मनुष्य किसी का कल्याण कैसे कर सकता है? इसलिये आपको ऐसे अति कोई मार्ग में नहीं जाना चाहिये। हालांकि अभी सुना है कि गवर्मेंट ही उसको करा रही है। तो, तो भगवान ही बचाये रखें। फिर कहते हैं मराठी में, राजा ने ही मारना शुरू कर दिया, तो क्या करें? गवर्मेंट ही ऐसा शुरू करा देगी तो भगवान बचाये। कोई भी अपना उपाय सहजयोग से जितना आसानी से कर सकता है, सरलता से कर सकता है, उतना योग से नहीं कर सकता। एक क्षण में भी हो सकता है।

सहजयोग का इलाज एक क्षण में होता है। जो आदमी पार हो जाता है, वैसे भी वो विमुक्त हो जाता है। क्योंकि उसका कनेक्शन जो जुट जाता है। उसके अन्दर शक्तियाँ जो आने लग जाती हैं। उसका कोई उसके शक्ति पे निर्भर नहीं होता है। जो चारों तरफ फैली हुई शक्ति है, वही उसके अन्दर से दौड़ने लग जाती है। तो उसका जो फिजिकल बीईंग है, उसका जो इमोशनल बीईंग है, उसका जो मेंटल बीईंग है वो पूरी तरह से प्लावित हो जाता है। और इस वजह से ऐसे आदमी डायनॅमिक हो जाते हैं। और वो दिन भर मेहनत करते रहेंगे। उनको थकान नहीं होती। वो आकर्षक होते हैं। उनके साथ आपको बैठने को मन करता है। ऐसे दस आदमी साथ बैठते हैं। तो उसमें मज़ा आता है। अब ये है, सौ में एकाध आदमी दुष्ट होता ही है। आप नहीं कह सकते की सब के सब होंगे। एकाध आदमी होता ही दुष्ट। उसको कितना भी करो, उसका दोहरा स्वभाव नहीं जाता। उसकी वो गन्दगी नहीं जाती। बहुत कोशिश करे, तब भी वैसे के वैसा ही रह जाता है। थोड़ा अंतर होता है। फिर वैसा होता है। फिर होता है। मुश्किल से चलता है। लेकिन इसमें फर्स्ट क्लास लोग भी बहुत हो जाते हैं। लेकिन आप अगर दस योगियों के साथ बैठिये, तो आप बाहर चले जाईये। नहीं तो अपने को इन्शुअर कर लेंगे। क्योंकि दो कुस्ती वाले बैठ भी सकेंगे साथ में। पर दस योगी साथ में बैठ गये, तो चकनाचूर। अभी एक सेमिनार हुआ था। तो मैंने एक-दो से कहा, भाई, जरा जा के आओ। देख के आओ। तो ऐसी वहाँ जूता पैजार हुयी। ऐसी जूता पैजार हुयी, कि जो देखने गये थे वो भागते भागते आ गये। अपना सर बचा के कि, 'माताजी, ये क्या आपने माया कर दी।' मैंने कहा, 'मैंने क्या माया करी?' तो ये तो तमाशा है ही। एक योगी उससे लड़ रहा है कि, 'मैं तुझ से बड़ा हूँ।' वो कहने लगा कि, 'मैं तेरे से

बड़ा हूँ।' तो वो जो अफ़सर लोग वहाँ बैठे थे, वो मुझ से कहने लगे कि, 'माताजी, ये लोग तो अपने को योगी कहते हैं, तो ये कुर्सी के लिये तो हम से ज्यादा खुल्लम खुल्ला लड़ रहे हैं।' और गाली-गलोच सब कुछ। तू ऐसा, तू क्या समझता है अपने को। मैं शिव का भक्त हूँ, मैं कृष्ण का भक्त हूँ। शिव और कृष्ण वहाँ सर पकड़ के बैठे हैं, कि वाह भाई ये मेरा भक्त कब से हो गया? इस तरह का तमाशा सारे ही दिल्ली में चला हुआ था। वो जो न्यूज पेपर वाले थे, प्रेस वाले, वो मेरे पास आये कि, 'माताजी, ये स्टॉप करिये। ये क्या नान्सेन्स चल रहा है! इसे क्या ये फॉरेनर्स समझेंगे? टेलिविजन साथ में लगाया हुआ है। ३५ लाख रूपये तो एक योगी ने डोनेट करे थे। पर उनका तो ऐसा कचुम्बर हुआ कि वो तीसरे दिन आये नहीं। उनके तो सारे ही पैसे डूब गये बेचारों के। ३५ लाख रूपये। पता नहीं उन्होंने कहाँ से ला के उसपे लगाये। ऐसे अॅकॅडमिशियन से और इस तरह के आर्टिफिशिअल लोगों से, कृत्रिम तरीकों से परमात्मा को नहीं बुलाया जाता। परमात्मा हृदय में है। जिसके हृदय के अन्दर में परमात्मा की आस नहीं वो परमात्मा को पा ही नहीं सकता। जो लोग अपने को अॅकॅडमिक बना रहे हैं, और उसको सारा एक बड़ा भारी, उन्होंने बड़ा विवरण दिया। बड़ा भाषण दिया। हालांकि उनके सर पे ऐसा लग रहा था कि भूत नाच रहे हैं। क्या बोल रहे थे, वही जान रहे थे। बाकी किसी के तो समझ में ही नहीं आया, कि वो क्या बक रहे हैं। ऐसे लोग आप का संचालन करें तो आपकी स्वतंत्रता पे आपको पूरा भरोसा रखना चाहिये। और अपनी स्वतंत्रता पे खड़ा होना चाहिये।

एक तो ये भी जानना चाहिये कि लोग सिर्फ पैसे के लिये कर रहे हैं। पैसा बड़ी गंदी चीज़ है। अगर आज मैं यहाँ बक दूँ आपको कि मेरे ऑर्गनायझेशन में पचास हजार रुपया रखा है। आप से मैं कहती हूँ कि आप से दस गुना ज्यादा दूँगी। लेकिन सब मक्खियाँ आयेंगी। असली लोग नहीं आयेंगे। सारी मक्खियाँ आयेंगी। वो पैसा है। जो पैसा रखा गया है वहाँ पर। हम योगा सेमिनार में बोलेंगे हमारा इतना ये होगा, महत्त्व होगा। फिर लोग हमारे पास में आयेंगे। हम बड़े माने जायेंगे। और इसी सब चीज़ों से, मिथ्या चीज़ों के पीछे इन लोगों ने ये योग जो है, बेचारों ने सीधे साधे गृहस्थी में रहने वाले लोगों को, उनको खोखला बना दिया। विवाहित मनुष्य के लिये मना है कि वो हठयोग पे जायें। बिल्कुल ही मना है।

क्योंकि हठयोग की पहली चीज़ जो होती है उसे कहते हैं, इंपोटेन्सी। पहली चीज़ आयेगी इंपोटेन्सी। आप हठयोगी को देखियेगा कि वो इंपोटेन्ट होता है। पहली चीज़ है। क्योंकि जब उसका ड्रेनेज शुरू होगा, तब पहले वो मूलाधार चक्र पे ड्रेनेज होगा और ऐसा आदमी इनोसन्ट बिल्कुल नहीं होगा। बड़ा चालाक होगा। हठयोग को समझने के लिये, उसको चलाने के लिये और उसको करने के लिये वो व्यवस्थायें होनी चाहिये, कि जो पतंजलि के वक्त में थी। वो आज हैं नहीं। आज कल तो ग्रँड पॅरेंट्स को तो छोड़ो, अपने सास-ससुर को भी कोई घर में टिकने नहीं देता। माँ-बाप जो हैं, रात-दिन बच्चों को, ये सोचते हैं कि कहाँ से ये बला घर में आ गयी। ऐसी हालात में जितना भी आपके पास ड्रेन है, उसे खत्म करना चाहिये। आपके जितने टेन्शन्स हैं, उसे हटाना पड़ेगा और नॉर्मल तरीके से आप रहियेगा। जैसे नॉर्मल विवाहित लोग रहते हैं। उस ढंग से आप रहिये। एक्स्ट्रिम होने से सहजयोग नहीं काम करेगा। जो लोग एक्स्ट्रिम टेम्परापेंट पे हैं उनसे सहजयोग नहीं चल सकता है। लोग फिर ये सोचते हैं कि माताजी, आपने हमको क्यों नहीं पार कराया? क्या बात है? हम क्यों नहीं पार हुये? क्योंकि आप अॅबनॉर्मल आदमी हैं

ॲब्स्टिनन्स, कि ये नहीं खायेंगे, वो नहीं खायेंगे, भूखे मरेंगे। जो लोग भूखे मरते हैं जान बूझ कर के, ऐसे तो बहुत मर रहे हैं बेचारे। वो तो हो जायेंगे पार। लेकिन जो जान बूझ कर भूखे मर रहे हैं वो कभी पार नहीं होगे। आप अपने अन्दर बसे हुये अन्नपूर्णा का अपमान कर रहे हैं। इसका मतलब नहीं कि आप बकासुर हो जाईये। बिल्कुल भी नहीं। वो दूसरी साइड़ है। लेकिन ॲब्स्टिनन्स के साइड में बता रही हूँ, कि एक्स्ट्रिम ॲब्स्टिनन्स जो है नहीं करना चाहिये। सिर्फ एक ही चीज़ का ॲब्स्टिनन्स हो सके, सहजयोग से पहले तो अच्छा है नहीं तो बाद में तो मैं छुड़ा ही देती हूँ, वो है शराब! शराब और स्मोकिंग भी, क्योंकि दोनों ही हमारे अवेअरनेस पे काम करते हैं। हमारी चेतना पे पड़ते हैं। इसलिये दो चीज़ को छोड़ने का प्रयत्न करना चाहिये। ये अगर छूट जायें तो ठीक है और नहीं छूटे तो बाद में मैं ध्यान में आपका छुडा दूंगी।

अब दूसरी साइड़ देखिये। जिसको कि आप सांख्य कहते हैं। ये इमोशनल साइड़ है। आपके बच्चे ही आपके सब कुछ हो गये। अब वो बच्चे की मरे जा रहे हैं उसके लिये आपको फिर दुनिया में कुछ नहीं दिखायी देता। उस बच्चे के लिये आप दस बच्चे मार डालेंगे पर उस बच्चे को आप बचायेंगे। ये सांख्य हुआ। इंडलजन्स। शराब पीना, औरतों के साथ बहुत ज्यादा मतलब रखना। अपनी को छोड़ कर और औरत के प्रति दृष्टि उठाना। आदि, सभी बिल्कुल वही चीज़ है। वो चाहे थोड़ी हो चाहे ज्यादा हो। ये आज के समाज में बहुत बड़ी बीमारी लग गयी है। उसके बारे में पहले भी मैंने आपसे कहा था कि फ्लर्टिंग की है, ये कुछ नहीं पर आज्ञा चक्र की बाधा है। ये भूत है। जिस आदमी की आँख फिरती रहती है, हर समय उसमें भूत होता है और उसकी आँख जब की दूसरी औरत पे पड़ी तो उसको भी भूत लग गया। छूत की बीमारी है। वो भी ये धंधे शुरू करती है। करते कुछ नहीं है, सिर्फ आँखें चलती रहती हैं। करना धरना कुछ नहीं उस में। आँखें चलती रहती हैं। लेकिन भूत आपका आज्ञा चक्र पकड़ जायेगा। इसलिये जिस आदमी का चित्त ऐसा चंचल होता है, उसका आज्ञा चक्र छुडाना मुश्किल होता है। इसलिये आज कल लोग कहते हैं कि हमारे सर में बड़ा दर्द होता है। हमें सर की बड़ी शिकायत हो जाती है। जो लोग बहुत ज्यादा काम करते हैं और जो काम में पहले ही संलग्न हैं, वो अपनी एनर्जी ऐसी ही ड्रेन आऊट कर रहे हैं। उसके अलावा ऐसी कोई बीमारी वो लगा नहीं, जैसे योग या इस तरह की इंडल्जन्स थी। तो वो चलते चलते खत्म हो जायेंगे। बहुतों के लिये आपने सुना होगा कि वो फलाने अफ़सर थे। बस, वो दो कदम चल गये, तिसरी कदम पे खा गये। आप अगर उनकी जीवनी पढ़ियेगा, उनको सारे शौक थे। उसी शौक में आपका इतना दारूण मृत्यु हो गया। मेरा मतलब मृत्यु सब का ही होता है। लेकिन किसी का ऐसा शुभ होता है और किसी का इतना अशुभ होता है। इसलिये जिस शक्ति को परमात्मा ने अपने को दिया हुआ है, उसको पवित्रता से इस्तमाल करना चाहिये।

जब आप इंडल्जन्स पे आते हैं, तो आपकी पवित्रता की भावना छूट जाती है। पवित्रता का मतलब ये नहीं होता है कि, किसी चीज़ से आप भागिये। बिल्कुल भी ये नहीं होता है। पवित्रता एक अपनी अन्दर की स्थिति है। जैसे कमल का एक पत्ता जिसका आपको उदाहरण दिया जाता है। उसकी अपनी स्थिति है। उस पे कोई चीज़ टिकती नहीं। उसका चित्त ऐसा है कि उस पे कोई चीज़ टिकती नहीं। ऐसी स्थिति जब तक नहीं आ जाती तब तक आपके अन्दर के जो बैठे हुये देवता हैं वो पूरी तरह से जागृत हो ही नहीं सकते। ये धर्म की स्थिति जिसमें की पवित्रता एक बड़ी भारी संक्षिप्त है। इसके गण जो हैं गणेश है और गणेश की मदद के बगैर कोई भी कार्य हो ही नहीं सकता और गणेश की विशेषता यही है, कि वो इनोसन्ट है। वो बच्चे हैं। अपने माँ के प्रति जो बच्चा पूरी तरह से

संलग्न होता है, वो बहुत चरित्रवान हो सकता है। बहुत चरित्रवान भी हो सकता है। और ये चीज़ें कोई करने से नहीं आती हैं। ये अन्दर होने से होती हैं। जब तक आप सहजयोग में पार नहीं हो जाईयेगा आपको कठिन जायेगा। पार हो जाने के बाद इस धर्म की स्थापना करने इतना आसान हो जायेगा क्योंकि आप देखियेगा कि एक ही माँ के पेट से इतने बच्चे पैदा हुये हैं। मेरे ही सहस्रार से इतने बच्चे पैदा हुये हो। तब आपस में वही भाई-बहन का रिश्ता आ जायेगा। जिस जगह ये रिश्ता टूटेगा, जिस जगह इसमें कोई भी किल्मिष आ जायेगा, जिस जगह इसमें कोई गड़बड़ी आ जायेगी, आप फौरन देखियेगा आपका चक्र पकड़ेगा। और पूरी तरह से पकड़ेगा और आपके वाइब्रेशन्स बंद हो जायेंगे और आप कहेंगे कि माँ, क्या हो गया? आपकी अगर नज़र इधर-उधर घूमती है। यहाँ भी ध्यान में आ कर के, मैं कुछ भी नहीं करूंगी। आपके वाइब्रेशन्स बंद। मैं कुछ भी नहीं करती हूँ। आप ही ने बंद कर दिया। मैंने कुछ नहीं किया। बहुत से लोगों के वाइब्रेशन्स टूट जाते हैं। खास कर बूढ़े लोगों को, मैं विशेष रूप से कहती हूँ।

एक आश्चर्य की बात है, कि जवान लोग तो इसको कंट्रोल कर भी लेंगे क्योंकि इनकी शक्तियाँ अभी भी इंटॅक्ट है लेकिन बूढ़े लोगों को अगर ये आदतें लगी तो मुश्किल से छूटती हैं। जिन बूढ़े लोगों को इस तरह की आदतें लगी हुई हैं, उनका बुढ़ापा तो आ गया है, लेकिन उनके अभी आज्ञा चक्र पे भूत बाधा आ गयी है। इसलिये बूढ़े लोगों को इस तरह विशेष ध्यान देना पड़ता है, कि वो अपनी पवित्रता को बनाये रखें। सब संसार में अपनी लड़कियाँ हैं, अपनी बहनें हैं, अपनी माँयें हैं, यही पवित्र रिश्ते को मानना चाहिये और एक अपनी पत्नी से ही संबंध स्थापित करना पड़ेगा। वो पत्नी अगर खराब हो, बुरी हो, जो भी हो, ये आपके पूर्वजन्म के कर्मों के अनुसार मिला है। आप कोई भी एक्स्प्लनेशन दे, वो एक्स्प्लनेशन परमात्मा को मंजूर नहीं। क्योंकि आपके वाइब्रेशन्स बंद हो जायेंगे। वो जैसे भी हो, ये आपका भाग्य है। ये आपका पूर्वसंचित है, ये आपकी गड़बड़ियाँ पहले ही हो चुकी हैं। उसके लिये परमात्मा से क्षमा माँगें। उनसे माफ़ी माँगे। उसको ठीक करें। आप अपनी पत्नी में भी सहजयोग से बहुत फर्क कर सकते है। उसे टॉलरेट करें। लेकिन उसके बहाने पर कोई भी सहजयोगी कहें कि नहीं, मैं ये करूंगा, वो करूंगा और गड़बड़ काम करूंगा, तो आपके वाइब्रेशन्स बंद हो जायेंगे। चाहे और कुछ हो न हो। ये इंडल्जन्स में आया है।

ॲब्स्टिनन्स में एक और चीज़ बड़ी खराब आ जाती है। वो है कट्टरता। आदमी कट्टर हो जाता है। मैं तो बिल्कुल हिंदू हूँ, कट्टर हिंदू। मैं तो कट्टर मुसलमान हूँ। जब कट्टर हो गया तो कटार चल गयी। जो आदमी कट्टर हुआ उसके वाइब्रेशन्स गायब। अभी एक लड़की आयी थी वहाँ दिल्ली में। बड़े मज़ेदार केसेस दिल्ली में आये थे। यहाँ रेअरली आते हैं। उसको बहुत दिन से माइग्रेन था। इतना ज्यादा। मुझे क्या पता ये कौन है? क्या है? आ गयी। मैंने कहा, 'ठीक है, बैठो।' मैंने कहा कि, 'तुम में कोई कट्टरता है क्या?' तो कहती है कि, 'मेरे में तो कोई नहीं। मैं तो भगवान को बहुत याद करती हूँ।' मैंने कहा, 'कौन से भगवान को?' कहने लगी कि, 'मैं तो हिंदू धर्म वाली हूँ। तो हिंदू धर्म के जितने भी भगवान है, उतने सब को मैं मानती हूँ।' मैंने कहा, 'अच्छा, देखो बेटे, तुम ऐसा करो। यहाँ पर नाभि चक्र पे जनक जी का नाम लो। चाहे तुम दत्तात्रेय जी का नाम लो। वो तुम्हारे आदिगुरु हैं।' लिया उसने। कहने लगी कुछ फर्क नहीं पड़ता। मैंने कहा, 'अच्छा, तुम अपनी उंगलियाँ कान में डाल के 'अल्लाह हो

अकबर' कहो और पैगम्बर साहब का नाम लो।' फौरन उसका सरदर्द चला गया। उसने कहा कि, 'माँ, ये कमाल हो गया! क्या मेरा सिरदर्द किस वजह से था?' मैंने कहा, 'क्योंकि तुम कट्टर हो।' किसी से आप नफ़रत करेंगे तो सरदर्द होगा ही आपको। अधिकतर बीमारियाँ आप में इतनी हैं, क्योंकि आप किसी न किसी कारण, किसी न किसी बहाने आप किसी से नफ़रत करते हैं। परमात्मा ऐसे आदमिओं की क्यों मदद करेगा! आप ही बताईये। क्योंकि आप और नफ़रत करें! आप किसी से अगर और नफ़रत करते हैं तो परमात्मा आपको और शक्ति देगा की आपको बीमारी आयेगी। वो भी आपसे नफ़रत करता है। नफ़रत ऐसी चीज़ है कि मनुष्य के पास एक पॅराबोली होती है उसकी। जाती है दुसरे की तरफ़ और नफ़रत ही वापस आती है। आप अगर दूसरे के प्रति प्रेम रखिये, तो प्रेम जाता है और प्रेम ही माँगता है।

इसी से सारे आपके दूसरे जो षड्‌रिपु है, सब इसी तरह के है। ये सभी के सब छूट तभी सकते हैं, जब आपका कनेक्शन दूसरों से हो जायेगा। आप अगर कहें कि मैं अपना इसको पकड़ लूँ, मैं अपने मन को काबू में कर लूँ। मैं अपने क्रोध को काबू में कर लूँ। तो आप ....हो जायेंगे। आप अगर झूठ बोलना ठीक करेंगे तो आप जा कर ..... से मिलेंगे। सब कंडिशनिंग होती है। लेकिन जब तक आपका कनेक्शन परम से नहीं होता है, परम तत्त्व से, तब तक ये हो नहीं सकता। एक और चीज़ जिससे आपके वाइब्रेशन्स रूक जाते हैं।

ये बताने में, इसमें कोई अहंकार की बात नहीं है, लेकिन सत्य बात है, कि आपने वाइब्रेशन्स सिर्फ सहजयोग के द्वारा पाये। जिस दिन आप सहजयोग के विरोध में कुछ भी कार्य करते हैं, या हमारे खिलाफ़ कोई भी बात कहते हैं, मैं चाहे नाराज़ न हूँ, लेकिन गण बैठे हैं। आपको फौरन खत्म कर देंगे। बहुत से लोग इस बात को नहीं जानते, और वो सोचते हैं कि हम ही ने पा लिया और हम ही कुछ कर लेंगे। ये कोई विशेष ही शक्ति की वजह से काम हो रहा है। नहीं तो आज तक नहीं हुआ होता पहले। अब आपके सामने कहने में कोई हर्ज नहीं। क्योंकि आप में से बहुत से लोग इस बात को साक्षात् कर चुके हैं। ये कोई विशेष शक्ति ही के कारण हो रहा है। ये कोई आप के करने से होने वाला नहीं है। बहुत से लोग सोचते हैं कि हम कर ले तो हो जायें।

दिल्ली में ही एक ऐसी लेड़ी थी कि जिनको हमने रियलाइजेशन दिया। और रियलाइजेशन देने के बाद उनके अन्दर ये भावना आ गयी, कि हम भी माताजी हो गये। और वो सब को सिखाने लगी की ऐसे करो, वैसे करो, मेरे पाँव पे आओ, चरण छूओ। ये करो, वो करो। उनके तो वाइब्रेशन्स बंद हो ही गये। कोई शंका नहीं। लेकिन जिन्होंने उनके पाँव छूअे थे, उन सब के ही वाइब्रेशन्स बंद हो गये। वो रोते रोते मेरे पास आये, कि माताजी, वो तो कह रहे थे कि आप के बाद मैं ही हूँ। मैंने कहा, 'अरे भाई, मैंने तो ऐसा कहा नहीं था। आगे क्या करें?' ये भी एक बड़ी भारी चीज़ है जिसको समझ लेना चाहिये। क्योंकि आपको मुफ्त में मिल गया। आप अपने वाइब्रेशन्स पा चुके हैं। इसलिये ये भी समझना चाहिये, कि ये चमत्कार जो घटित हुआ है, वो ऐसा ही नहीं हुआ। उसमें कोई न कोई विशेष शक्ति का खेल हुआ है। और ऐसा आज तक नहीं हुआ था। 'न भूतो न भविष्यति' इसकी बात भी नहीं की। जो आज हो गया है, वो क्यों हुआ है? आज तक किसी ने भी ये नहीं बताया था, कि इस उंगली पर या इस उंगली पर, ये ये चक्रों पे चलता है। और इसका ही नहीं, लेकिन दूसरों का भी इवॉल्विंग आपके हाथ में जो दिया गया है एक विशेष शक्ति का है। ये आज हमें मुँह खोल के कहना पड़ता है, ये आपके लिये अकल की बात है।

आपको अगर अकल हो, आप इसे सोचे और समझे तो आप जान सकते हैं कि ये वाइब्रेशन्स आपको कहीं भी नहीं मिल सकते। और कहीं मिलते ही नहीं। ये आपके अपने हैं इसमें कोई शंका नहीं है। लेकिन वो जहाँ से मिले हैं और जिसने ये कार्य किया, उसके प्रति पूर्णतया जब तक आप समर्पित नहीं होंगे, तब तक आपके वाइब्रेशन्स का फ्लो हो ही नहीं सकता है। और इसकी गवाही यहाँ पर देने वाले कम से कम ५०% लोग हैं। शरणागत हो जाओ। शरणागति के बगैर होता नहीं। और आदमी इतना अहंकारी है, उसको हमने वाइब्रेशन्स दे दिये। उसको हमने ठीक कर दिया। उसको सब कुछ कर दिया। उसको सब समझा भी दिया। तो भी उसको शरणागति नहीं आती। पर अभी अगर किसी अँधे को अंगूठी निकाल कर दे दिया तो हो गये उस के पैर पे। सब बेच बाच के उसके चरणों में चले जायेंगे। सब कुछ छोड़ कर के कवितायें लिखेंगे। उस पे किताबें लिखेंगे। उस पे ये लिखेंगे, उस पे वो लिखेंगे।

हमारे यहाँ के लोग हैं आप जानते हैं। जिनपे की अभी केस भी करने का ये लोग सोच रहे हैं। यहाँ से मेरा भाषण चुरा के ले गये और वहाँ पे अपना बता के किया। ऐसे भी लोग यहाँ पर आय हैं। उनके वाइब्रेशन्स नहीं हैं। किताब लिखने से क्या? कितना लिखेंगे? आप जानते हैं कि यहाँ तो सारा समुंदर के समुंदर पड़ा हुआ है। दो-चार बातें हम कह देते हैं वो आप लिख देंगे किताब में। इससे क्या फर्क पड़ने वाला है! समाज, संसार असलियत को जान लेता है। आज नहीं कल। और लोग थूकेंगे उन लोगों पर। मैं तो कहती हूँ कि कोई जरूरत ही नहीं, ऐसों पे केस क्या करना? वो अपनी ही कर्मगति से जायेंगे। क्योंकि ठीक है, आपको लिखना ही चाहिये। क्योंकि सत्य आपको कहना ही पड़ेगा। लेकिन कहना पड़ेगा कि ये कहाँ से आया है। ये परमात्मा का विधान है। हमारे फोटो के सिवाय आप अगर काम करना चाहेंगे तो नहीं कर सकते। और अगर कोई ऐसा सोचे कि हमारे फोटो के बगैर ही काम हो जायेगा, तो नहीं होता है। इसके लिये बहुत से लोग यहाँ पर बता सकते है, इसलिये आप उनसे पूछे तो वो आपको बता सकते हैं कि ये बात बिल्कुल सही है कि माताजी के नाम और फोटो के बगैर काम नहीं हो सकता।

सहस्रार पे ही ये स्थान है। इसलिये सहस्रार के मंत्र में हमारा नाम होना अत्यावश्यक है। एक हम अभी गये थे किसी बाबाजी के पास में। वो रियलाइज्ड है खुद। लेकिन अहंकार तो अभी उनमें हैं। और उस अहंकार में उन्होंने जो नाम लेना शुरू कर दिया तो उसमें उन्होंने कहा कि, 'सिर्फ माताजी कहेंगे, माताजी निर्मलादेवी नहीं कहेंगे।' सब के सहस्रार बंद हो गये। बाद में उन्होंने कम्प्लेंट करी एक थी हमारी शिष्या उससे कि, 'क्या बात है? इस मंत्र पे तो चलता नहीं, सहस्रार खुलते नहीं। क्या बात हो गयी?' उसने कहा, 'अच्छा, कहिये आप मंत्र!' जब कहना शुरू कर दिया, उन्होंने देखा, तो उन्होंने व्हेरी नाइसली वो नाम निकाल डाला। उसने कहा कि, 'माताजी के बगैर ये चलने नहीं वाला सहस्रार पे। अभी आपको मैं दिखाती हूँ।' जैसे ही उसने मेरा नाम लेना शुरू किया, तीन नाम के अन्दर उन्हीं के खुद के वाइब्रेशन्स खुल के बहने लगे। हालाकि वो रियलाइज्ड कब के हुये हैं। ये सही बात है।

आज आप के सामने मैं मुँह खोल के ये बात मैं इसलिये कहना चाहती हूँ, कि जो गलतफ़हमियाँ हैं उसको दूर कर लो। दिल्ली में इसके कारण बहुत ही उपद्रव हो गया। बहुत ज्यादा उपद्रव हो गया। और उसी उपद्रव के कारण स्वरूप बहुत से लोगों के वाइब्रेशन्स खो गये थे। फिर वहाँ भी मुझे उनसे खुले रूप से कहना पड़ा, और आप से भी आज मैं फिर से खुले रूप से कह रही हूँ। इसमें आप का कोई भी अहंकार डुबाने की बात नहीं। आप की माँ मैं ही हूँ। ये जान लेना चाहिये। अपनी माँ को स्वीकार्य करने में जो आदमी झिझकता है और उससे आँख चुराता है, उस

आदमी में धर्म ही नहीं, ये समझ लेना चाहिये। आपने वाइब्रेशन्स मुझ से ही पाये हैं और मै ही आपकी माँ हूँ। इस बात को आपको स्वीकार्य करना ही होगा। इसमें आपका कुछ नहीं जाता है। आप बगैर माँ के पैदा नहीं हुये हैं। जो आदमी ऐसा कहता है कि मैं बगैर माँ के पैदा हुआ हूँ, उससे बढ़ के महामूर्ख कोई नहीं हो सकता। आपने वाइब्रेशन्स हवा में नहीं पाये हैं। अगर पाने के होते तो हमारा आना ही व्यर्थ हो जाता। इसलिये अपने माँ को स्वीकार्य करें। माँ का ......बहुत बड़ा होता है। ईसामसीह जो कि इतना बड़ा आदमी था, उसने सूली पर भी चढ़ के अपने माँ से कहा, 'माँ तेरा बेटा कहाँ हैं? और तू कहाँ है?' वहाँ पर भी, सूली पर, जब कि उसके बदन से लहू बह रहा था, तब भी उसने अपनी माँ को याद किया। जो अपनी माँ को भूल सकते हैं वो दुनिया में हर चीज़ को भूल सकते हैं।

सारे संसार का कोई भी धर्म, राष्ट्र धर्म लो, समाज धर्म लो, कोई भी धर्म ऐसे आदमी के अन्दर नहीं आ सकता है, जो अपनी माँ को नहीं मानता। इसलिये जो आपने वाइब्रेशन्स पाये हैं, और जो लोग पाने वाले हैं उनको पता होना चाहिये कि माँ का इससे पूरा ही संबंध है और अधिकार है। हालांकि इसमें आप दे कुछ भी नहीं सकते। आपका अधिकार ही है। आपका लेने का अधिकार है। मेरा तो देने का अधिकार है। मुझे आपसे लेना कुछ नहीं है। लेकिन अगर आपके वाइब्रेशन्स कल खो गये, फिर से मैं मुँह खोल कर आप से नहीं कहने वाली, इस बात को आप समझ लें। हर आदमी के लिये ये बात प्रमाण है। और यहाँ पर ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्होंने इसके अनुभव लिये हैं, एक्स्परिमेंट किये हैं और देखा हुआ है।

कल मैं दूसरी बात बताऊंगी। जो कि बहुत जरूरी है, जिसे आप भूतबाधा आदि कहते हैं। वो क्या चीज़ हैं? वो है या नहीं? और वो किस तरह से ॲक्ट करती है? और उसका क्या इफेक्ट होता है? ये डिटेल्स में मैं बताऊंगी। लेकिन आज जो है मैंने योग पे बताया है, हठयोग पे, जो सूर्यनाड़ी पर काम करती है, अधिकतर।

अब आपको प्रश्न हो तो थोड़े पूछ लें। फिर हम लोग ध्यान में जायेंगे।

प्रश्न : (अस्पष्ट)

श्री माताजी : मैं बताती हूँ बेटे, उसको तो कुछ समझना ही नहीं चाहिये। उसको क्यों समझना है? वो तो अनएज्युकेटेड, छोटे छोटे बच्चे हैं वो तो जल्दी से पार हो जाते हैं। वो कोई एज्युकेशन थोड़े ही है इसका। ये तो प्रकृति की अपनी एक प्रक्रिया है। इसका कोई एज्युकेशन नहीं। जितना पढ़ा लिखा हो, मुश्किल जाता है मुझे। जितने पढ़े लिखे होंगे, भगवान बचायें ऐसे लोगों से। सरदर्द हो जाता है मुझे। जितने कम पढ़े हैं उतना ही अच्छा है। क्योंकि पढ़ के वो भी एक अहंकार, एक तरह का विचित्र अहंकार उस आदमी में होता है। कोई जानने की जरूरत नहीं। तुम पहले लाइट जला लो। तुमको कोई जानने की जरूरत है कि ये लाइट कैसे जलाना है? कोई जानने की जरूरत नहीं। बस बटन दबा दो जल जायेगा। फिर उसके बाद में इंजिनिअरिंग समझाऊंगी नां! सबको समझाया है, तुमको भी समझाऊंगी। उसका जो गुह्य से गुह्यतर है, सारा ही, जितना भी देवी का प्रादुर्भाव हुआ, जिसने जिस तरह से शक्ति से कार्य किया और आज इस कलयुग में वो करने वाली है, वो सभी बताऊंगी। उसमें कोई शंका की बात नहीं। कोई विश्वास रखने की जरूरत नहीं। बिल्कुल। बिल्कुल आप विश्वास नहीं रखिये। लेकिन इसका मतलब नहीं कि आप अविश्वासी हैं। उसको खुले रखें, अपने दिमाग को आप खुले रखें। विश्वास रखने का तो

कोई सवाल ही नहीं उठता। विश्वास रखने से कभी कभी और भी कोई दोष हो जाता है, कि आप मेरे पे परम विश्वास से आये ये दोष हो सकता है।

आपको विश्वास रखने की जरूरत नहीं है। कोई भी ऐसी चीज़ करने की जरूरत नहीं है। आप सिर्फ ऐसे बैठे हैं ऐसे बैठे रहिये। अकस्मात आपके अन्दर प्रकाश आ जायेगा। आपको क्या सूर्य पे विश्वास करना पड़ता है क्या! कुछ नहीं। क्या ये जो पत्तियाँ सूर्य पे विश्वास करती हैं जिनका रंग हरा हो जाता है सूर्य के प्रकाश से। सब अपने आप होता है। आप विश्वास करें चाहे न करें, परमात्मा तो है ही। विश्वास करना और न करना इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। न विश्वास चाहिये न ही उसका एज्युकेशन चाहिये। न ही उसके लिये कोई बलप्रयोग चाहिये। उसके लिये कोई शक्ति चाहिये की सर के बल आप खड़े हैं कि नाच रहे हैं कि कूद रहे हैं कुछ भी नहीं चाहिये। कुछ मुँह पर आप एक्स्प्रेशन मत लाईये। यहाँ किसी को ठगा ठगी नहीं करने की है। आप ही को पाना है। बहुत से लोग मैं देखती हूँ कि ऐसा विकट मुँह बना लेंगे, कहीं हँसने वाला, कहीं कुछ। वो सोचते हैं कि एम्प्रेशन मार देंगे। एम्प्रेशन तो भगवान पे पड़ना चाहिये। अगर आप का संचित है तो हो जाता है। आज नहीं कल, कल नहीं परसो।

प्रश्न : पुनर्जन्म है क्या?

श्रीमाताजी : हाँ, है, मुझ से अगर पूछो तो मैं कहूँगी। उसकी सिद्धता तुम्हें बाद में आयेंगी। उसको सिद्ध भी कर सकते हैं। लेकिन आप अपने पुनर्जन्म पे नहीं जायें। इसकी वजह ये है कि मैंने देखा है कि हिंदू का जो माइंड होता है जो आज हिंदू हैं ये पहले मुसलमान भी रहे होंगे, इनका जो माइंड होता है इनकी पुनर्जन्म की भावना बड़ी तीक्ष्ण होती है। इसके कारण वो पास्ट में ज्यादा रहते हैं कि हम पिछले जन्म में क्या थे? अरे भाई, कुछ भी रहे होंगे। आज क्या है? अभी, प्रेझेंट, इस मुमेंट, ये जरूरी चीज़ है। इसलिये पुनर्जन्म पे आप चित्त न दें। जो भी हो पुनर्जन्म हो गया होगा। कोई हर्ज़ नहीं। आप में जो कुछ ......(अस्पष्ट) निकले हैं उनका शोषण ही करने के लिये बैठी हूँ। सब कुछ कर लो। लेकिन सिर्फ इतना करो, प्रेम से, अपने प्रति प्रेम से, और सारे ही समाज के प्रति प्रेम से रहो। किसी के प्रति कट्टरता मत रखो। किसी के तरफ द्वेष भाव नहीं रखो। अत्यंत प्रेमपूर्वक रहो। फिर किस को अपने मन से हटाना है, कौन राक्षस है? कौन दानव है? वो भी मैं आपको बाद में बता दूंगी।

प्रश्न : ....(अस्पष्ट)

श्रीमाताजी : आप पार हो गये, माने ये पार होने का भी एक मैंने ऐसा देखा है, कि हमारी ऐसी कल्पना होती है, कि पार होने का मतलब ये कि हम कृष्ण बन गये। ऐसा नहीं होता। जो नहीं होता वो नहीं होता। जो होता है वो होता है। उसमें कोई हमारे कहने की चीज़ नहीं होती। पहले निर्विचारिता अपने आप के अन्दर में जैसे ही आज्ञा चक्र को कुण्डलिनी लाँघ जायेंगी आप निर्विचार हो जायेंगे। आप में एक तरह की ब्लँकनेस आ जायेंगी। लेकिन सर में बहुत हेजीनेस आयेगी। लाइटनेस नहीं आने वाली है। और जिस वक्त में आज्ञा चक्र को लाँघ कर के कुण्डलिनी ब्रह्मरंध्र को छेद जायेगी, तब एक तो आप एकदम लाइट हो जायेंगे। आपके हाथ में कुछ ऐसा लगेगा, ठण्डी ठण्डी, ठण्डी ठण्डी लहर सी आ रही है। किसी किसी में शुरू शुरू में गरम, गरम सी आयेगी, जैसे ही ठण्डी, ठण्डी आने लग जायेगी लाइटनेस भी आने लग जायेगा। थोड़ी देर में, काफ़ी आने के बाद आप लाइटनेस फील करेंगे और ऐसा लगेगा कि आप निर्विचार भी हो गये हैं, लेकिन आप पूर्णतया सतर्क, पूर्णतया आप सतर्क है। माने आप सोये

हुये हैं। आप सतर्क है। ऐसा आपको लगेगा। फिर उसके बाद बहुत से लोग कहते हैं कि, 'माताजी, हम निर्विचार हो गये, उसके बाद हमें एकदम निर्विकल्प हो जाना चाहिये।' होना तो चाहिये। हमारी तो यही इच्छा है। पर होता नहीं। हमने जो पाँच-छ: साल मेहनत की है लोगों पर, उसमें से हम कहेंगे कि ५% लोग ऐसे हैं, कि जो एक बार पार हो गये तो निर्विकल्प में ही खड़े हो गये। ऐसे भी लोग हैं। बहुत ही ऐसे लोग हैं, कि वो बहुत ही पीछे रह गये। मैं जानती हूँ कि पॉइंट्स कहाँ है। वो कहाँ पे बैठे हैं। लेकिन ऐसे बहुत कम लोग हैं। अधिकतर लोग निर्विचारिता में उतरते हैं। मतलब क्या है कि आप यहाँ बीचोबीच आ कर के यहाँ के यहाँ, यहाँ के यहाँ करते रहते हैं। यहाँ से आप अपना इगो, सुपर इगो दोनों को देखते हैं और वो नीचे भी उतार सकते हैं आप। उसको निकाल सकते हैं। अनेक उसके विधित हैं, उसको आप निकाल सकते हैं। उसको बाद आपको सारी विधियाँ, उसकी सारी मुद्रायें, उसका तरीका, ये जो है इस तरह से घुमाना और ये सब कुछ, आप सीख सकते हैं। हम लोग सिखायेंगे। लेकिन आप पकड़ते जायें। लेकिन आपको पता होगा आपको पकड़ गया है। माने अभी, जैसा मैंने कहा, मैं जनार्दन स्वामी जी से मिलने गयी थी। जैसे मैं गयी, वो बड़े भारी साधु-पुरूष हैं और वो नागपंथीय पार आदमी है। तो उन्होंने देखती ही मुझ से कहा, 'माँ, मेरा आज्ञा पकड़ा और मेरा विशुद्धि पकड़ा है। दोनों को जरा साफ़ कर दीजिये।' मतलब ये की आप देखते हैं कि आपका आज्ञा व विशुद्धि पकड़ा है। माने आप देखने लग जाते हैं। आप के अन्दर अवेअरनेस आती है। आपको अभी तक मालूम नहीं 'मेरा हृदय कहाँ चल रहा है। मैं कहा चल रहा हूँ।' पर जब आप सहजयोग में पार हो जाते हैं तब आपको फौरन लगता है कि यहाँ से कुछ उठ रहा है, कुछ जा रहा है। फिर आपको लगता है यहाँ पकड़ गया, वहाँ पकड़ गया है। आप ऐसे ऐसे कर के उसको निकाल दीजिये। तो निकल जायेगा। यहाँ कुछ कर दीजिये वो निकल जायेगा। वो कैसे निकालने का वो हम बताते है। माने आप और आपकी मोटर कार जो है, वो अलग हो जाती है। फिर आप अपनी मोटर कार भी साफ़ कर सकते हैं। उसको ठीक भी कर सकते हैं। ये चीज़ पहले हो जाती है। जो निर्विचार आदमी हो जाता है, उस वक्त। पर निर्विचारिता आने के बाद भी, जब तक आपकी स्थिति जमती नहीं श्रद्धा में, क्योंकि अब श्रद्धा शुरू होती है, जब जानने के बाद। जब वाइब्रेशन्स आ गये तब श्रद्धा में आना पड़ता है। तब आप जबरदस्ती आयें, पता नहीं आयें कि नहीं आयें, हो रहा है कि नहीं हो रहा है। इस तरह से आप करते रहेंगे, तो बन गया मामला। जरा उसमें स्टेडीनेस आपके अन्दर आ जायेगी वैसे ही आप देखियेगा कि आप के हाथ से आपके अन्दर की कुण्डलिनी को जागृत करियेगा। कुण्डलिनी को आप जागृत करें। इतना ही नहीं आप कुण्डलिनी को जागृत करेंगे। (मराठी...साइड में बातचीत)

अब अगर आप एक बार पार हो गये और जरासी निर्विकल्पता आये तो ध्यान में ही रहते हैं। आप ध्यान में ही रहते हैं। आप हर समय ध्यान में रहते हैं। फिर क्या सूतक, कौन क्या? और कौन क्या? हर समय आप ध्यान में ही रहते हैं। लेकिन विशेष दिनों का कुछ कुछ असर होता ही है। जैसे महाशिवरात्रि के दिन। एक विशेष रूप होता है। इन दिनों का बड़ा महत्त्व होता है। उस दिन सबको मैंने एअरकंडिशन्ड में डाल दिया था। तो वो हो सकता है। लेकिन तो भी जैसे सूतक के दिन आपका मन अगर दु:खी रहता है तो ज्यादा ही ध्यान में रहना चाहिये। उसमें कोई अशुभ तो होता ही नहीं। ये कभी भी अशुभ नहीं होगा। याने आपको आश्चर्य होगा।

एक साहब थे उनको बाधा ने पकड़ा। आप समझ लीजिये। और उनके कारण दस और सहजयोगियों को पकड़ा। अब दस सहजयोगी उनसे बहुत इम्प्रेस्ड हो गये थे पहले से ही। अब उन्होंने पकड़ा। तो मैंने कहा कि उसको

तुम लिख कर के पच्चीस जूते लगाओ। इक्कीस कहते हैं, इक्कीस जूते लगाओ। उन्होंने इक्कीस जूते लगायें। ये लोग तो छूटे नहीं पर वो छूट गया। क्योंकि वो इन दस आदमिओं ने लगाये थे उस को जूते दस मर्तबा लगें और ये लोग अपने को जो मार रहे थे, वो एक ही मर्तबा लगे। जूता भी मारिये तो भी आप छूटेंगे। कुछ भी करियेगा उद्धार ही होगा। हम आपको अगर डाँट दें, तो भी उद्धार होगा। हम आपको प्यार कर लें तो भी उद्धार होगा। मतलब उद्धार ही होने वाला है। इससे संहार होने वाला नहीं, उद्धार ही होने वाला है। आप अगर कहें कि, माताजी, फलाने बहुत सता रहे हैं, उसको मार डालिये।' मैं उसको मारने को जाऊंगी, उसका उद्धार होगा। वो अच्छा हो के इधर आ जायेगा। ट्रान्सफॉर्मेशन ही होगा। इससे और कुछ होने ही नहीं वाला। जैसे कोई कहता है, कि इसको हटाओ। ये मिनिस्टर अच्छा नहीं। इसको हटाओ। मैंने कहा, इसको हटाना क्यों? उसी को बदल देते हैं न! ट्रान्सफॉर्मेशन हो जायेगी। इससे कोई आदमी निकलेगा नहीं। हटेगा नहीं। ट्रान्सफॉर्मेशन होगा। कोई अगर महादुष्ट होगा, विचलित होगा। उसको परेशानी हो जायेगी। फिर धीरे-धीरे वो भी अपने चक्कर में आ जाये। ये ट्रान्सफॉर्मेशन का तरीका है। फिर आप चाहे उसको डाँटो। चाहे मारो। चाहे उसको कुछ भी करो। चाहे वाइब्रेशन्स दो, चाहे उसके बारे में सोचो। आप उसपे बंधन डालो। आप देखियेगा उसका ट्रान्सफॉर्मेशन हो जायेगा। किसी का बिगड़ने नहीं वाला। अब बहुत से लोग है, जैसे मेरी सासू मुझे बहुत सताती है। मैंने कहा ठीक है। सासू को चप्पल ने मार सकती हो तो अधर्म हो जायें। तो ठीक है तुम उसपे बंधन डालते बैठे रहो, सासूजी के नाम से। थोड़े दिन में पता चला की सासू जी आयी। एकदम लाल उसका मुँह है, उसकी हेल्थ बड़ी अच्छी हो गयी। और कहने लगी कि, 'मुझे तुम पे इतना प्रेम आ रहा है कि पता नहीं क्यों इतना तुम्हारे उपर प्रेम आ रहा है।' वो आश्चर्यचकित कि यही वो है क्या? कैसे हा गया? उधर वो भी जवान दिखने लगी। उसके मूँह पे भी तेज़ आ गया। इससे सिर्फ ट्रान्सफॉर्मेशन होगा। क्योंकि मनुष्य में ही भगवान होने की भी क्षमता है और राक्षस होने की भी क्षमता है। इसलिये मनुष्य भगवान की ओर जाता है। चाहे आप कुछ भी करे आप चित्त में उस आदमी के लिये विचार ही लाये, उसी वक्त वो आधा छूट जायेगा। उसको आप मारो, डाँटो, पीटो, कुछ भी करो। उसका भला होगा। एक दशा में जाने के बाद ये नहीं की आप पार हो गये और मारना शुरू कर दिया। एक चीज़ को समझ लेना चाहिये। जान लीजिये। ये ट्रान्सफॉर्मेशन का तरीका है। ट्रान्सफॉर्मेशन है। कोई चेंज करने का नहीं। कुछ चेंज करने का है। मनुष्य बदल जाता है।

और कोई प्रश्न है?

प्रश्न : ....(अस्पष्ट)

श्रीमाताजी : नहीं, ऐसी तो बात नहीं है। छोड़ने की बात नहीं है। देखिये उसका शास्त्र सीखना पड़ेगा। अब जैसे आपको बताते हैं कि सीधी बात है, कि ज्यादातर लोग राम का नाम लेते हैं। हमारे यहाँ तो इसकी बीमारी बहुत लोगों को है। अब राम आपके हृदय चक्र में हैं। स्थित है। अब वो राम का नाम लेते हैं, उनका हृदय चक्र ही पकड़ा रहता है। क्योंकि क्या है कि जहाँ से नाम लेना है उसका मार्ग बंद है और आप उसी पे ठोक मार रहे हैं। इस वजह से आपका राम नाम पकड़ा रहेगा। तो ऐसे आदमी का अगर हृदय चक्र ही पकड़ा हुआ है। तो रियलाइजेशन के बाद में, हम रियलाइजेशन देते हैं तो राम ही का नाम लेते हैं। लेकिन हमारा कनेक्शन है। इसलिये उसका दरवाजा खुल जाता है। क्योंकि तो भी उसको केअरफुली रहना चाहिये। अपने हृदय चक्र पे ज्यादा चोट न करें। ये समझ लीजिये

किसी आदमी को पेट का कैन्सर है। और वो कृष्ण का नाम ले रहा है तो उसको कोई फायदा नहीं होने वाला। उसको तो किसी गुरु का नाम लेना चाहिये। क्योंकि वैष्णवी पॉवर जो है धर्म की, उसको इस्तेमाल करना पड़ता है, कैन्सर के लिये। अब किसी का, अगर आपका विशुद्धि चक्र पकड़ा हुआ है, किसी का माने ये कि विशुद्धि नाम से विशुद्धि चक्र, पहले चीज़ पकड़ेगी फिर जिसका नाम लोगे वो चक्र पकड़ेगा। जिन्होंने भी नाम लिया वो मुश्किल काम है और जिन्होंने अति लिया तो अति मुश्किल काम है। तो आपने अगर नामस्मरण किया है, यहाँ से, कृष्ण के लिये लिया तो बस यही पकड़ेगा। लेकिन आपने अगर किसी का, शिवजी का किया, तो हृदय चक्र और ये कॉम्बिनेशन जम गया। अब दोनों को छुड़ाना पड़ता है। अच्छा, फिर हम शिवजी को छुड़ायेंगे। और कृष्ण से ही छुड़ायेंगे। अब आपको पता होना चाहिये कि कौनसा चक्र पकड़ा है और उसी को आपको छुड़ाने के लिये कौनसा नाम लेना चाहिये। संध्या भी, या कोई भी चीज़ हो, इसका आपको शास्त्र पता नहीं, अशास्त्र से काम करना सहजयोग के विरोध में होता है। सब कुछ अत्यंत शास्त्रीय, उसका प्रोटोकॉल है, उसका तरीका है, उसका ढ़ंग है। ये तो हम बात-बात पे बताते रहते हैं।

जैसे हरिद्वार हम गये थें। यहाँ एक महाशय बैठे हुये हैं। वो भी एक पहुँचे हुये पुरुष है। लेकिन वो बेचारे, उन सब से मैंने कहा था कि गंगाजी मेरे सर पे नहीं चढ़ सकती। आप सर पे मत ड़ालना चाहे कहीं पानी पड़ जायें। लेकिन केअरफुल रहना। मेरे सर पे मत डालो। लेकिन उन्होंने शायद सुना नहीं था। हो सकता है। उन्होंने थोड़े से पानी की छींटे मेरे सर पे डाल दी। फौरन गंगा उसे खिंच के ले जाने लगी। मुझे मालूम था। जैसे ही पानी पड़ा मैंने उनका पैर पकड़ लिया। वो बच तो गये, लेकिन १०७ बुखार पे सात दिन पड़े। प्रोटोकॉल होता है हर एक चीज़ का। आप अगर मेरी ओर अगर पैर कर के बैठें, वाइब्रेशन्स गायब। सब चीज़ की इज्जत होती है। ये चीज़ हिन्दुस्तान के लोगों को आती है। अमेरिकन लोगों को भगवान ही माफ़ कर देता है। क्यों कि वो जानते नहीं। उनको कुछ समझता ही नहीं है। किस तरह से इसका होता है? जिस तरह सब संपन्न करना चाहिये उस तरह से पूर्ण संपन्नता है। उसकी श्रद्धा है, उसका तरीका है। प्रोटोकॉल है। आप कौन सी उंगली से कुंकु लगायें। हर एक चीज़ का है। इस उंगली से, आपका आज्ञा चक्र का है। हर एक चीज़ में आपको पता होना चाहिये कि ये उंगली आपको कहाँ इस्तेमाल करनी चाहिये। ये कहाँ इस्तेमाल करनी चाहिये। इसका क्या अर्थ होता है। सब धीरे-धीरे, आपने जितने भी यहाँ, जिसको रिच्यूअलिजम कहते हैं, वो कहाँ से आया? वो क्यों आया? उनका क्या मतलब है? सब चीज़ आप समझ लीजिये। इन सब चीज़ में अर्थ है। और जो प्रार्थना है, परमात्मा से प्रार्थना करनी होती है। जो नमाज़ है, जो बाप्तिज्म है, ये सब चीज़ों का अर्थ आपको सिर्फ सहजयोग में लग सकता है। क्योंकि अभी पहली मर्तबा आपके वाइब्रेशन्स शुरू हो गये। जब तक आपके अन्दर वो इलेक्ट्रिसिटी नहीं आयेगी तो आप क्या उसका उपयोग दिखायेंगे। हवाई बात हो जायेगी। ये पंखा चलने लग जायेगा। ये होने लग जायेगा। पहले बिजली तो आये। बगैर उससे क्या होगा? जैसे हर एक चीज़ के बटन यहाँ लगे हुये हैं। आप दबा रहे हैं एक बटन, चल दुसरी चीज़ हो रही है। उसका सारा शास्त्र सीखने के बाद आप अँधे जैसे जो आज तक करते आ रहे हैं, वो पहले आपको छोड़ना पड़ेगा पूरी तरह। जब आप पूरी तरह उसको छोड़ेंगे, तब उसके शास्त्र के अनुसार उसको पूरा आप सीख लीजिये, तब समझ लीजिये, तब आपको पता होगा।

जैसे आज इन्होंने पूछा कि कुम्भ की स्थापना क्या चीज़ होती है? उसी पे आधा घण्टा मैंने सुनाया। कहने

लगे, 'कहीं शास्त्र में लिखा नहीं।' मैंने कहा, 'भाई, उस वक्त लिखते तो क्या फ़ायदा? आज तुम लोग समझते हो तो बता रही हूँ।' बहुत सी बातें आप कहेंगे कि, 'माँ, ये हमने कभी नहीं पढ़ा। ऐसा नहीं था।' लेकिन उसका साक्षात् होगा, मतलब आप देख सकेंगे कि ऐसी ऐसी चीज़ है।

अभी ये जो लोग यहाँ ऐसे ऐसे कर के बैठे हैं न वो सभी जानते हैं कि कौनसा हमारा चक्र पकड़ गया है? कैसे कुण्डलिनी उठाना है? कैसे हम को बंधन देना है? ये सब लोग जानते हैं। जो लोग जानते नहीं हैं, वो सोचते हैं कि पता नहीं ये लोग क्या कर रहे हैं? इसका एक तरीका होता है। इसका एक ढ़ंग होता है। अभी किसी का भी आज्ञा चक्र पकड़ गया तो वो यूँ पकड़ के बैठ जायेगा। वैसे तो विचार से आप अपने सारे चक्रों को साफ़ कर सकते हैं। जब आपकी गति इतनी ऊँची हो जाती है तब आप इतने हाथ-पैर नहीं हिलाते हैं। जरासा कम हो जाता है। जरा सी ऊँची गति पर पहुँचने पर आदमी मन से ही उस चीज़ की सफ़ाई करता है। चित्त से ही उस चीज़ की सफ़ाई कर सकता है।

अच्छा, अब जायें ध्यान में। जो लोग बीमार हैं, परेशान हैं, वो लोग भी ऐसे हाथ करें हमारी ओर। और कम से कम चार दिन ध्यान में जरूर आईये। चार दिन में आप जरासा अच्छे से स्टेडी हो जायेंगे। स्टेडीनेस की जरूरत होती है। कोई गॅरंटी की चीज़ नहीं है। ये होना पड़ता है। आप आँख बंद करें। जो आप पार हो जायेंगे तो पता हो जायेगा। लेकिन आप लोग भी आँख बंद कर के देखें आपके अन्दर ठण्डा ठण्डा आ रहा हो। और आपके विचार अगर ठहर गये हो, तब आप देखिये अपने अन्दर। दूसरों को मत देखिये। एक आदमी आया तो आँख उठा के देख लिया। ऐसी चंचलता होगी तो कभी कुछ न होगा।